

**International Journal of Innovative Research in Science,  
Engineering and Technology**

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

# वर्तमान में गांधीवादी वैचारिक दर्शन की उपादेयता

**Dr. Vinay Kumar Pinjani**

Lecturer in Political Science, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

## सार

गांधी जी का मानना था कि किसी देश की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक प्रगति अंततः शिक्षा पर निर्भर करती है। उनकी राय में शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य आत्म-मूल्यांकन है। उनके अनुसार, छात्रों के लिये चरित्र निर्माण सबसे महत्वपूर्ण है और यह उचित शिक्षा के अभाव में संभव नहीं है। समकालीन दुनिया की उपरोक्त समस्याओं के लिए सबसे उपयुक्त समाधान गांधीजी के सिद्धांतों का पालन करना है। यह गांधी का दर्शन है जो हमें इस विधेय से बचा सकता है। गांधी के विपुल लेखन, भाषण, और वार्ता अपने समय के साथ-साथ वर्तमान दुनिया के भारतीय जीवन के हर बोधगम्य पहलू को कवर करते हैं। इस आर्टिकल का उद्देश्य 21 वीं सदी में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता को बताना है।

## परिचय

मोहनदास करमचंद गांधी जी का जीवन मानव जीवन में सत्य और अहिंसा के मूल्यों को स्थापित करने के प्रयास की कहानी है। महात्मा गांधी केवल उनकी ही श्रेणी में आते हैं। वह भी एक आविष्कारक थे, लेकिन एक अलग तरह के, एक अनोखा तरीका था विरोध का, संघर्ष का, मुक्ति का और सशक्तिकरण का। उनकी सेना युद्ध करने में नहीं, बल्कि शांति स्थापित करने में लगी थी। उनका हथियार, हथियार और गोला-बारूद, नहीं था बल्कि "सत्य बल", और "सत्याग्रह" था।<sup>1</sup> उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में सत्य और अहिंसा के प्रयोग का सहारा लेकर भारत और ब्रिटेन को आपसी द्वेष और बदले की भावना से बचाया। भारत की स्वतंत्रता ने एक ऐसा उदहारण पेश किया जिसने एशिया और अफ्रीका के अन्य देशों से बिना रक्तपात के मुक्ति को संभव बना दिया, जिनको उन्नीसवीं शताब्दी में कुछ यूरोपीय देश अथवा ब्रिटिशों ने अपने अधीन कर लिया था। 17 जून, 1893 को एक युवा भारतीय बैरिस्टर, मोहनदास करमचंद गांधी को गैर-श्वेत होने के कारण पीटरमेरिटज़बर्ग स्टेशन पर एक ट्रेन से निकाला दिया गया था। तब ही से, एक चिंगारी जल गई जो विश्व इतिहास के पाठ्यक्रम को बदलने के लिए काफी थी। 11 सितंबर, 1906 को मोहनदास करमचंद गांधी ने जोहान्सबर्ग के एम्पायर थिएटर से पहला सत्याग्रह अभियान शुरू किया। उन्होंने नस्लीय भेदभाव, उत्पीड़न<sup>2</sup> और अन्याय के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध के लिए एक स्पष्ट और तीव्र आह्वान जारी किया। उन्होंने सत्याग्रह को सत्य से पैदा हुआ बल और अहिंसा से प्रेम, और युद्ध का एक नैतिक समकक्ष के रूप में वर्णित किया। महात्मा गांधी, एक प्रतिभावान और असामान्य व्यक्तित्व थे। वह एक राजनीतिक रणनीतिकार थे,<sup>3</sup> जिन्होंने पारंपरिक राजनीति से किनारा कर लिया और कोई पद नहीं संभाला। महात्मा गांधी परंपरा का सम्मान करते थे। वह बहुत धार्मिक थे। लेकिन उनका धर्म एक ऐसा धर्म था जो हर धर्म से जुड़ा था, एक ऐसा धर्म जो सर्व-समावेशी था। उन्होंने परिवर्तन की गति को बल देने के लिए, किसी भी रूप में हिंसा को छोड़ दिया। गांधी जी ने कहा था, मैं उन शॉर्टकट में विश्वास नहीं करता जिनमें हिंसा शामिल हो।<sup>4</sup>

महात्मा गांधी के राजनीतिक दर्शन का सार वर्ग, जाति, रंग, पंथ या समुदाय, इन सब को छोड़कर हर व्यक्ति का सशक्तिकरण था। उनके लिए, अत्यधिक गरीबी भी अपने आप में हिंसा का एक रूप था। 21 वीं सदी में लोकतंत्र सरकार का पसंदीदा रूप बन गया है, फिर भी दुख की बात है कि उनकी "लोकतंत्र की धारणा" सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत नहीं है।<sup>5</sup> अब हम मानते हैं कि राजनीतिक स्वतंत्रता आर्थिक प्रगति के साथ होनी चाहिए। लेकिन वास्तव में सार्थक होने के लिए, इस वृद्धि को न्यायसंगत बनाना होगा। राजनीतिक शक्ति के साथ, कुछ लोग आर्थिक प्रगति के लाभ का आनंद नहीं ले सकते हैं, जबकि कई को उनका उचित हिस्सा नहीं मिलता है।<sup>6</sup> पर्यावरण संरक्षण और संरक्षण की अनिवार्यता के साथ आर्थिक विकास भी सुसंगत होना चाहिए। लेकिन स्थिरता का मतलब यह नहीं है कि बड़ी संख्या में लोगों को बेहतर भौतिक कल्याण और जीवन स्तर से वंचित किया जाए। राजनीतिक प्रवचन, इन दिनों, वैश्विक युद्ध पर आतंक केंद्रित है। और वास्तव में, आतंकवादी जो निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को निशाना बनाते हैं, वे

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

किसी भी मदद और दया के लायक नहीं हैं।<sup>7</sup> लेकिन आज के दुश्मन केवल व्यक्ति नहीं हैं, वे भी दुनिया को सोचने और समझने के तरीके हैं। अधिक हिंसा के साथ हिंसा का मुकाबला करना एक टिकाऊ समाधान प्रदान नहीं करता है। अगर लोकतंत्र आतंकवाद के खिलाफ युद्ध छेड़ने जा रहा है, तो जो उपाय अपनाए जाते हैं, वे सुसंगत होने चाहिए और लोकतंत्र के मूल्यों के विपरीत नहीं होने चाहिए। यह गांधीवाद विचारधारा के अनुरूप है।<sup>8</sup>

महात्मा गांधी ने हर दिन के जीवन में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका पर विश्वास किया। धर्म को, निजी और सार्वजनिक कार्यों के लिए एक नैतिकता रूप में देखा अर्थात् विश्व का कोई भी धर्म हिंसा नहीं सिखाता – ऐसा उनका कहना था। उनका विश्वास हर धर्म से जुड़ा हुआ था, एक ऐसा विश्वास जो सर्व-समावेशी था। जब उनसे उनकी धार्मिक मान्यता के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, “हां मैं एक हिंदू हूँ। मैं एक ईसाई, एक मुस्लिम, एक बौद्ध और एक यहूदी भी हूँ।” अपने पूरे जीवन में, महात्मा गांधी सत्य के साधक और अहिंसा के सबसे बड़े प्रस्तावक थे। गांधीजी ने सत्य को जितना महत्व दिया, शायद उतना अधिक महत्व कभी नहीं दिया जा सकता है। उनका मानना था कि धर्मग्रंथों को पढ़ने से भगवान कभी नहीं मिलेंगे। ईश्वर को महसूस करने का एकमात्र तरीका “शुद्ध और श्रेष्ठ चरित्र का विकास” करना है।<sup>9</sup>

### विचार-विमर्श

इसी तरह, अहिंसा की शक्ति महात्मा गांधी द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित की गई थी, जब उन्होंने भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त करने के लिए अहिंसा का प्रयोग किया था। अहिंसा का अर्थ “दुष्ट-कर्ता की इच्छा के प्रति नम्रता से प्रस्तुत होना नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है एक अत्याचारी की इच्छा के विरुद्ध पूरी आत्मा को लगाना बिना किसी हथियार के।” पश्चिमी सभ्यताओं ने इस महत्वपूर्ण भूमिका को महसूस करना शुरू कर दिया है कि गांधीवादी दर्शन आज के संकटग्रस्त वातावरण में शांति और अहिंसा की संस्कृति पैदा कर सकता है। जबकि पश्चिमी सभ्यताएं गांधीवादी दर्शन को अपने शैक्षिक पाठ्यक्रम के एक हिस्से के रूप में शामिल कर रही हैं, हम भारतीय “पश्चिमी संस्कृति” का अनुकरण करने के लिए उत्सुक हैं। जबकि हमें इस तथ्य पर गर्व होना चाहिए कि सबसे महान मानव जो कभी जीवित थे, वह हमारे राष्ट्रपिता हैं। यह बहुत ही हास्यास्पद है कि हम में से अधिकांश,<sup>10</sup> विशेष रूप से नई पीढ़ी, गांधीजी के योगदान के बारे में बहुत कम जानते हैं, और वर्तमान संदर्भ में उनके विचार की प्रासंगिकता समझने में भी असमर्थ हैं। शांति, अहिंसा, अर्थशास्त्र, कृषि और स्थानीय शासन पर उनके विचार वर्तमान समय में इतने उपयुक्त हैं कि यह एक असाधारण दूरदर्शी ही उनके विचारों / दर्शन को अपने जीवन में स्थापित कर सकता है। अगर हमें अपने देश के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास करना है, और साथ ही साथ सामाजिक समता सुनिश्चित करना है, शक्ति केंद्रीकरण को खत्म करना है और शक्ति और संसाधनों का उचित विकेंद्रीकरण करना है,<sup>11</sup> तो हमें हमारी मुख्य धारा के विचार और नीतियों को गांधीवादी विचारों / दर्शन को एक उदाहरण देना होगा और उनका परिचय देना होगा।

यह सच है कि आज की दुनिया महात्मा गांधी की दुनिया से काफी अलग है। औपनिवेशिक अधीनता के साथ जिन बुनियादी मुद्दों पर उनका टकराव हुआ, वे हमारी दुनिया से गायब हो गए हैं। नस्लीय भेदभाव में भी काफी कमी आई है। परन्तु इसी समय, शांति, सद्भाव और स्थिरता के लिए नए खतरे उभरे हैं। और यह 21 वीं सदी के विरोधाभासों में से एक है, जबकि शांति की स्थापना दुनिया की सबसे बड़ी अनिवार्यता बन गई है। शांति को बनाए रखने के पारंपरिक उपकरण तेजी से अप्रभावी पाए गए हैं। चाहे वह जातीय राष्ट्रवाद हो, धार्मिक अराजकतावाद, आर्थिक असमानता या सैन्यता<sup>12</sup> – ये सभी आज की दुनिया में संघर्ष के शक्तिशाली चालक हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि संघर्षों को सुलझाने के लिए हमें एक नए प्रतिमान की बहुत आवश्यकता है। परन्तु, प्रश्न यह नहीं है कि क्या महात्मा गांधी के विचार प्रासंगिक हैं या नहीं। बल्कि, असली मुद्दा यह है कि क्या हम उनके बताये चरणों पर चलने के लिए मन में हिम्मत और शक्ति रखते हैं? क्या हम अपने जीवन को जीने के लिए तैयार हैं जैसा उन्होंने उपदेश दिया और सबसे महत्वपूर्ण बात, जैसा उन्होंने अनुभव किया।<sup>13</sup> वर्तमान संदर्भों में जब गांधीजी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता की बात होती है तो आज चाहे भारत का फैशनेबल युवा हो या किताबी ज्ञान के महारथी आईटी प्रोफेशनल या ग्रामीण बेरोजगार युवा हों, सभी के गांधीजी प्रिय पात्र हैं। ये सभी गांधीजी को अपने से जोड़े बगैर नहीं रह सकते हैं। महात्मा गांधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं जितने अपने वक्त में थे। गांधीजी का बचपन, उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचार, सर्वोदय, सत्याग्रह, खादी, ग्रामोद्योग, महिला शिक्षा,

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

अस्पृश्यता, स्वावलंबन एवं अन्य सामाजिक चेतना के विषय आज के युवाओं के शोध एवं शिक्षण के प्रमुख क्षेत्र हैं। भारतीय युवा हमेशा से गांधीजी के चिंतन का केंद्रबिंदु रहा है।<sup>14</sup> वर्तमान युवा पाश्चात्य प्रभावों से संचालित है। उसकी सोच निरकुंश है। वह अपने ऊपर किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहता है। ऐसी परिस्थितियों में गांधीजी के विचारों की सर्वाधिक जरूरत आज के युवाओं को है। गांधीजी हमेशा युवाओं से रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा रखते थे। गांधीजी ने उस पीढ़ी के युवाओं को भयरहित कर अंग्रेजों के दमन का सामना करने का अद्भुत साहस दिया था। वे हमेशा युवा ऊर्जा को सही दिशा देने की बात करते थे। आंदोलन के समय वे युवाओं को हमेशा सतर्क करते रहते थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय उन्होंने कहा था हमारा आंदोलन हिंसा का अग्रदूत न बन जाए इसके लिए मैं हर दंड सहने के लिए तैयार हूँ, यहां तक कि मैं मृत्यु का वरण करने को भी तैयार हूँ। उस समय के युवाओं से उनकी अपेक्षा थी कि वे अपनी ऊर्जा और उत्साह को स्वतंत्रता प्राप्ति में सार्थक योगदान की ओर मोड़ें।<sup>15</sup>

गांधीजी ने हमेशा से युवाओं को वंचित समूहों के उत्थान के लिए प्रेरित किया है। वो व्यक्तिगत घृणा के हमेशा विरोधी रहे हैं। उनका कथन था- 'शैतान से प्यार करते हुए शैतानी से घृणा करनी होगी।' उन्होंने हमेशा युवाओं को आत्मप्रशंसा से बचने को कहा है। उनका कथन है कि जनता की विचारहीन प्रशंसा हमें अहंकार की बीमारी से ग्रसित कर देती है<sup>16</sup>, वर्तमान आईटी प्रोफेशनल के लिए गांधीजी मैनेजमेंट गुरु हैं। वे हमेशा आर्थिक मजबूती के पक्षधर रहे हैं। गांधीजी ने हमेशा पूंजीवादी व समाजवादी विचारधारा का विरोध किया है। उनका मानना था कि देश की अर्थव्यवस्था कुछ पूंजीपतियों के पास गिरवी नहीं होनी चाहिए। उनकी अर्थव्यवस्था के केंद्रबिंदु गांव थे। उनके अनुसार जब तक गांव के युवाओं को गांव में ही रोजगार नहीं मिलता है, तब तक उनमें असंतोष एवं विक्षोभ रहेगा। ग्रामीण बेरोजगारों का शहर की ओर पलायन, जो कि भारत की ज्वलंत समस्या है, का निराकरण सिर्फ कुटीर उद्योग लगाकर ही किया जा सकता है।<sup>17</sup>

भारतीय साहित्य की युवा पीढ़ी हमेशा से गांधी दर्शन से प्रभावित रही है। उस समय के साहित्य पर गांधी दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। मैथिलीशरण गुप्त की भारत भारती, प्रेमचंद की रंगभूमि, माखनलाल चतुर्वेदी की पुष्प की अभिलाषा, रामधारी सिंह दिनकर की मेरे नगपति मेरे विशाल, सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी आदि साहित्यिक रचनाएं गांधी दर्शन से ही प्रेरित रही हैं। मनुष्य प्रजाति की उत्पत्ति से लेकर आज तक की सारी मानवता व्यक्तिगत, सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति के लिए प्रयासरत रही है। गांधीजी का मानना था कि समाज में शांति की स्थापना तभी संभव है, जब व्यक्ति भावनात्मक समानता एवं आत्मसंतोष को प्राप्त कर लेगा।<sup>18</sup> गांधीजी के अनुसार शांति की प्राप्ति प्रत्येक युवा का भावनात्मक एवं क्रियात्मक लक्ष्य होना चाहिए तभी उसकी ऊर्जा, गतिशीलता एवं उत्साह राष्ट्रीय हित में समर्पित होंगे। गांधीजी युवाओं को सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा औजार मानते थे। वे हमेशा चाहते थे कि सामाजिक परिवर्तनों, सामाजिक कुरीतियों, सती प्रथा, बाल विवाह, अस्पृश्यता, जाति व्यवस्था के उन्मूलन के विरुद्ध युवा आवाज उठाएं। उनका मानना था कि शोषणमुक्त, स्वावलंबी एवं परस्परपोषक समाज के निर्माण में युवाओं की अहम भूमिका है<sup>19</sup> एवं भविष्य में भी होगी। वर्तमान युवा प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं तथ्यपरक सिद्धांतों को मानता है। कक्षा में मैंने अपने युवा विद्यार्थियों से चर्चा के दौरान प्रश्न किया कि गांधीजी के स्वतंत्रता प्राप्ति के योगदान से इतर आपको उनका कौन सा गुण प्रभावित करता है? सभी का औसत एक ही जवाब था- उनकी अहिंसा और सत्यनिष्ठा। गांधीजी हमेशा आत्मनिरीक्षण के पक्षधर रहे हैं। गांधीजी के सिद्धांत भी लोकतंत्र एवं सत्य की कसौटी पर कसे-खरे सिद्धांत हैं। गांधीजी की असहमति, उनका बोला गया सत्य आज के युवा को बेचैन कर देता है।<sup>20</sup> उनकी आस्थाएं अडिग हैं। उन्होंने हर विश्वास को बड़ी जांच-परखकर व्रत की तरह धारण किया था। उन्होंने युवाओं के लिए स्वराज को सबसे बड़ा आत्मानुशासन, सत्याग्रह को सबसे बड़ा व्रत, अहिंसा को सबसे बड़ा अस्त्र एवं शिक्षा को सबसे बड़ी नैतिकता माना है।<sup>21</sup>

मैंने अपने छात्र, जो कि आईटी प्रोफेशनल एवं मेडिकल क्षेत्र में पढ़ रहे हैं या अपनी सेवाएं दे रहे हैं, से बातचीत के दौरान प्रश्न किया कि आपके दैनिक जीवन में गांधीजी के दर्शन की क्या प्रासंगिकता है? उनका कहना था कि आज प्रतिस्पर्धात्मक कार्यक्षेत्रों में मानसिक दबाव बहुत है। जब भी काम या पढ़ाई का बोझ उन्हें मानसिक या शारीरिक रूप से शिथिल करता है तो वे लोग गांधीजी की जीवनी 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' पढ़ते हैं<sup>22</sup> जिससे उनके अंदर आत्मबल एवं ऊर्जा का संचार होता है। आज भारत में युवाओं के सामने ऐसे आदर्श व्यक्तित्वों की कमी है जिसे वो अपना रोल मॉडल बना सकें। गांधीजी हर पीढ़ी के युवाओं के रोल मॉडल रहे हैं एवं होने चाहिए।<sup>23</sup> आज हमारा समाज सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। इन सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा देने में गांधीजी के सिद्धांत एवं उनका दर्शन हमारे युवाओं के मार्गदर्शक होने चाहिए। आज हमारे युवाओं को मौका है कि वे

# International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

गांधीजी को अपना आदर्श बनाकर सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। हमारे युवा उनके दर्शन को अपनाकर अपने व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के विकास में पूर्ण ऊर्जा एवं उत्साह से समर्पित हों।<sup>24</sup>

आज उनके लिए यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी!

## परिणाम

30 जनवरी, 1948 को तड़के दोपहर में महात्मा गांधी ने मारग्रेट बोरका व्हाइट को जो आखिरी साक्षात्कार दिया, वह "एक शहर पर परमाणु हमले की स्थिति में अहिंसा के अपने सिद्धांत में उनकी दृढ़ता" पर था। महात्मा का उत्तर था कि यदि रक्षाहीन नागरिक अहिंसा की भावना से मरते हैं, तो उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा; वे सभी उस पायलट की आत्मा के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जिसने बिना सोचे समझे शहर पर मौत का छिड़काव किया था।<sup>25</sup> यह मानव जाति के लिए करुणा का अंतिम संदेश था। गांधी ने कहा था, "अहिंसा मानव जाति के निपटान में सबसे बड़ी ताकत है। यह मनुष्य की सरलता से विनाश के सबसे शक्तिशाली हथियार से अधिक शक्तिशाली है।" गांधी ने आगे कहा था, "मैं शार्टकट में विश्वास नहीं करता, जिसमें हिंसा शामिल है। हालाँकि, मैं प्रशंसा योग्य उद्देश्यों के साथ बहुत सहानुभूति रखता हूँ, मैं महानतम कारणों की पूर्ति के लिए भी हिंसक तरीकों का एक विरोधी हूँ। इसलिए, वास्तव में कोई मिलन स्थल नहीं है। हिंसा के स्कूल और खुद के बीच।"<sup>1</sup>

दूसरों के दुख को देखकर जो हृदय लहलुहान हो गया था, वह 30 जनवरी, 1948 को खून से लथपथ हो गया था, जिसमें तीन मौत से निपटने वाले स्लग गहरे दबे हुए थे। महात्मा ने सभी संतों का मार्ग बताया है? भारत ने अपनी आत्मा को खो दिया है, लेकिन उसकी आत्मा जीवित है और जब तक भारत जीवित रहेगा तब तक वह आत्मा हमारे बीच जीवित रहेगी।<sup>2</sup>

इसलिए, गांधी की प्रासंगिकता निर्विवाद है और यह इतना समय परीक्षण किया गया है कि वैश्विक आशंका और इसके बारे में बहस के बावजूद, मानव जाति की आखिरी उम्मीद गांधी और गांधी अकेले हैं, लेकिन गांधी इतने विनम्र और विनम्र हैं कि वे आने वाली पीढ़ी को चेतावनी देते हैं "गांधीवाद" के रूप में उनके विचारों, विचारों और विचारों से बचना। गांधी ने ठीक ही कहा था, "अभी तक गांधीवाद जैसा कुछ भी नहीं है" लेकिन कृपलानी "गांधीवादी मार्ग" शीर्षक पसंद करते हैं। गांधी हमेशा सत्य और अहिंसा के अभ्यास में अपने प्रयोगों पर चलते रहे। गांधी न तो अकादमिक दार्शनिक थे और न ही व्यवस्था निर्माता। वह अनिवार्य रूप से एक स्वतंत्रता सेनानी, एक समाज सुधारक और एक व्यावहारिक व्यक्ति थे। एक सामाजिक वैज्ञानिक की तरह नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक की तरह, गांधी अत्यधिक प्रयोग उन्मुख थे। तो उनका उद्देश्य सामाजिक, राजनीतिक, हर समस्या को सामने लाना था। गांधी की आत्मकथा का नाम "सत्य के साथ मेरे प्रयोग की कहानी" है।<sup>26</sup> उनके करीबी धीरेन्द्र मजूमदार कहते हैं कि दर्शन और कुछ नहीं बल्कि जीवन का एक तरीका है। गांधीवादी विचारधारा के सबसे बड़े व्याख्याताओं में से एक दादा धर्माधिकारी के साथ भी ऐसा ही है, जब वे कहते हैं कि गांधी के साथ "वाद" जैसा कुछ भी नहीं है। एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में, एक दार्शनिक के रूप में, एक नैतिकतावादी के रूप में, एक अध्यात्मवादी के रूप में और सबसे ऊपर सत्य के अभ्यासी के रूप में, महात्मा न केवल आज के लिए बल्कि कल के लिए भी प्रासंगिक हैं। वैश्विक स्तर पर, जब हिंसा की निंदा की जा रही है, धार्मिक कट्टरवाद की भर्त्सना की जा रही है, उच्च तकनीक अपनी उच्च प्रोफाइल के साथ दुनिया के लाखों लोगों की भीड़ की समस्या को हल करने वाली नहीं है, गांधी पूरे के अस्तित्व की एकमात्र आशा है बड़े पैमाने पर मानवता। हम गांधी के विचार में ईएम सुमाचार का "स्मॉल इज़ ब्यूटीफुल" देखते हैं, जो अस्तित्व की एकमात्र आशा है। पूर्ववर्ती पैरा में विभिन्न कोणों से गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन निम्नानुसार प्रस्तुत किया जाएगा:-

### 1. धर्म को प्रासंगिक कैसे बनाया जाए?

प्राचीन काल से ही मनुष्य अपने दैनिक जीवन में किसी न किसी धर्म का पालन करता आ रहा है। प्रत्येक शरीर अपने धर्म को सर्वोच्च और दूसरों के धर्म को निम्न मानता है। अपने धर्म की श्रेष्ठता की यह भावना अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए कई युद्धों में प्रकट हुई है और इस प्रकार धर्म की आड़ में निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएं इतनी खतरनाक हैं कि अब भी आतंकवाद को धर्म के कोण से देखा जाता है। हाल ही में ओसामा बिन लादेन और उसके अल-कायदा ने राष्ट्रपति बुश और उसके आदमियों को सलाह दी है कि वे इस्लाम स्वीकार कर लें या कार्रवाई का सामना करें।<sup>27</sup> इस खूंखार दृष्टिकोण ने इंसान को वहशी और क्रूर बना दिया है लेकिन गांधी

# International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

के पास ऐसी बुराई का सुंदर जवाब है। वे कहते हैं, "सभी धर्म इस तथ्य का पालन करते हैं कि "उनका ईश्वर सत्य है।" यदि एक धर्म के साथ ऐसा है, तो यह अन्य धर्मों के साथ भी सत्य है। इस प्रकार गांधी सभी धर्मों से सामान्य बिंदु को सामने लाते हैं और उनके लिए "सत्य ही ईश्वर है।" यदि इस अवधारणा को सभी ने स्वीकार कर लिया तो किसी भी धर्म के खिलाफ कोई युद्ध/घृणा या दुर्भावना नहीं होगी। क्यों न इस सुंदर सिद्धांत का पालन किया जाए? यदि इसे व्यवहार में लाया जाता है, तो सभी के धर्मों का सभी के द्वारा सम्मान किया जाएगा। इसलिए, जहां तक धर्म का संबंध है, गांधी का सरल तरीके से अध्ययन किया जाना चाहिए। हालांकि, इसके अलावा, गांधी को धर्म के बारे में और भी बहुत कुछ कहना है। एक लंबे अध्ययन और अनुभव के बाद, गांधी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि "(1) सभी धर्म सच्चे हैं; (2) सभी धर्मों में कोई न कोई त्रुटि है; (3) सभी धर्म मुझे लगभग अपने हिंदू धर्म के समान ही प्रिय हैं" <sup>3</sup> गांधी अलग-अलग धर्मों का समर्थन करता है, जैसे अलग-अलग रास्ते एक ही बिंदु पर आते हैं। शाखाओं और पत्तियों, इसलिए सच्चा और पूर्ण धर्म एक है लेकिन यह कई हो जाता है, क्योंकि यह मानव माध्यम से गुजरता है। <sup>5</sup>

यहां धर्म में कट्टरता या विशिष्टता की कोई गुंजाइश नहीं है। गांधी जी ने ठीक ही कहा था कि 'मेरा धर्म कारागृह का नहीं है।' <sup>6</sup> यह कथन अहंकार, जाति, धर्म या रंग के अभिमान के विरुद्ध एक प्रमाण है। उन्होंने कभी भी इस कट्टर विचार का समर्थन नहीं किया कि "पृथ्वी पर एक धर्म हो सकता है या रहेगा।" <sup>7</sup> वे सदैव परस्पर सहिष्णुता का पालन करते थे। उनका धर्म "सर्व धर्म संभव (सभी धर्मों के लिए समान दृष्टिकोण) है। यह स्वामी विवेकानंद के 'सार्वभौमिक धर्म' या टैगोर के 'मनुष्य का धर्म' के बहुत निकट है। उनका धर्म विभिन्न धर्मों के लोगों को एकजुट करता है और उन्हें एक ही मंच पर पहुंचने के लिए लाता है। परम सत्य अर्थात् विनम्रता की भावना और इस प्रकार संघर्ष को सौहार्दपूर्ण ढंग से और संयम के साथ हल किया जाना चाहिए, न कि एक दूसरे की श्रेष्ठता के साथ।" <sup>28</sup> गांधी का धर्म मनुष्य को आध्यात्मिक और वैज्ञानिक बनाता है। जैसा कि विनोबा ने ठीक ही वर्णन किया है कि आध्यात्मिकता और विज्ञान का अर्थ सर्वोदय (कुल उत्थान) है। लेकिन अध्यात्म माइंस साइंस का अर्थ है सर्वनस (कुल विनाश)। इस प्रकार, यदि गांधी की धर्म की अवधारणा का पालन किया जाता है, तो घृणा, शत्रुता, शत्रुता, युद्ध और विनाश की कोई गुंजाइश नहीं होगी। अगर हमें आज की दुनिया को तबाही से बचाना है, तो एक ही रास्ता है और वह सार्वभौमिक धर्म का अभ्यास करने का गांधीवादी तरीका है जो पृथ्वी पर शांति, शांति और सद्भाव के युग की शुरुआत करेगा। इस तरह गांधी की धर्म की अवधारणा आने वाले सभी समय के लिए महत्वपूर्ण है। <sup>29</sup>

## 2. राजनीति की परिवर्तित अवधारणा

राजनीति को सत्ता हासिल करने, सत्ता हासिल करने और सत्ता बरकरार रखने का खेल माना जाता है। पाश्चात्य अवधारणा में आज तक राजनीति को सत्ता की राजनीति के रूप में देखा जाता रहा है, जहाँ नैतिकता या मूल्य का कोई स्थान नहीं था, परन्तु अब यह अवधारणा लगभग समाप्त हो चुकी है। अब पाश्चात्य चिंतक भी राजनीति में नैतिक मूल्यों की बात करने लगे हैं, जबकि गांधीजी से शुरू से ही राजनीति का बोलबाला था और इसलिए उनका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सत्य और अहिंसा के दो शस्त्रों से लड़ा जाना था। जो अंततः एक आंदोलन बन गया और उन्होंने इसे सत्याग्रह कहा। उसके लिए राजनीति 'सेवा' का द्वार खोलती है न कि सत्ता के उपयोग या हड़पने का। गांधी के लिए, राजनीति मूल्य की नैतिक समस्या है। इसे अर्नोल्ड ब्रेख्त ने <sup>30</sup> "वैज्ञानिक मूल्य सापेक्षवाद" के रूप में खूबसूरती से वर्णित किया है। नैतिकता से राजनीति में क्रांति लाना समय की मांग है। "जब तक लोगों के नैतिक और आध्यात्मिक गुण उपयुक्त नहीं होंगे, तब तक सर्वोत्तम राजनीतिक प्रणाली और संविधान काम नहीं करेंगे।" <sup>9</sup> "नैतिकता प्रगति का कारण बनती है। नैतिकता हमारे समय के सामाजिक क्रांतियों के महान कार्य की सेवा करती है" - इंस्टीट्यूट ऑफ फिलॉसफी ऑफ साइंसेज (मॉस्को) के प्रोफेसर ए शिश्किन। <sup>10</sup>

आधुनिक समय में, हम देखते हैं कि राजनीति की जड़ें छल और बेईमानी में निहित हैं और अधिक से अधिक छल और अधिक बेईमानी पैदा करने के लिए बाध्य हैं। नफरत से नफरत और हिंसा से बड़ी हिंसा पैदा होनी चाहिए। इस प्रकार समय की आवश्यकता "राजनीति को नैतिक बनाने" की है। <sup>11</sup> गांधी की भविष्यवाणी का जोर है "धर्म से रहित कोई राजनीति नहीं है।" <sup>12</sup> पूरे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, केवल गांधी और गांधी ही थे, जिन्होंने वास्तव में धार्मिक आधार पर राजनीति की, क्योंकि वे हमेशा अपने बार-बार कहे जाने वाले कथन पर जोर देते थे, "धर्म से रहित राजनीति मौत का जाल है।" <sup>13</sup>

अब तक दुनिया ने केवल शारीरिक बल और कानून के बल का प्रयोग देखा है लेकिन गांधी ने थर्ड फोर्स <sup>14</sup> या लोगों की आत्मनिर्भर नैतिक शक्ति को उकेरा था। <sup>15</sup> गांधी लोगों की राजनीति के लिए हैं न कि पार्टि पॉलिटिक्स के। दरअसल, सत्ता सभी स्तरों पर लोगों के

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

हाथों में होनी चाहिए; पहल को लोगों तक पहुंचाना चाहिए। वह दलविहीन लोकतंत्र की वकालत करता है। लोगों के लोकतंत्र का उदय लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के एक नए युग की शुरुआत करेगा यानी नीचे से स्वराज (स्वशासन) की जरूरत है।<sup>16</sup>

गांधीवादी राजनीति में, लोकतंत्र लोगों का शासन बन जाता है और लोगों की शक्ति पर निर्भर करता है न कि पुलिस या सेना की शक्ति पर। इस प्रकार लोकतंत्र और हिंसा साथ-साथ नहीं चल सकते।<sup>17</sup> इसलिए गांधी "इच्छाओं के नैतिकीकरण" की वकालत करते हैं।<sup>18</sup> और "स्वैच्छिक कार्रवाई"<sup>19</sup> को लोकतांत्रिक जीवन और संस्कृति का आधार बने रहना चाहिए। सत्याग्रह (अहिंसक प्रतिरोध) के माध्यम से, गांधी अन्याय और शोषण का विरोध करते हैं और इस प्रकार राजनीति को शुद्ध करते हैं। यह संयुक्त राज्य अमेरिका में<sup>20</sup> डॉ. मार्टिन लूथर किंग द्वितीय और 1942-43 में किस्लिंग सरकार के खिलाफ नॉर्वेजियन स्कूल टीचर्स की गोली का विकल्प देता है, जो सत्तावादी शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध (सत्याग्रह) की शक्ति और ताकत का प्रदर्शन करता है। इस प्रकार गांधीवादी राजनीति की प्रमुख और रचनात्मक भूमिका है। वे संकीर्ण राष्ट्रवाद के विरोधी थे। राजनीति की उनकी अवधारणा उच्च मूल्यों के लिए थी। "भारत के उद्धार के माध्यम से", उन्होंने कहा, "मैं पश्चिमी शोषण के कुचलने वाले पहियों से पृथ्वी की तथाकथित कमजोर जातियों को मुक्ति दिलाना चाहता हूँ।"<sup>21</sup> और ऐसा ही हुआ और समय के साथ भारत की आजादी के बाद ज्यादातर कमजोर देश स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरे। हमने दूसरों की आजादी के लिए भी लड़ाई लड़ी और इस श्रृंखला में नवीनतम 1971 में बांग्लादेश की आजादी की लड़ाई है।<sup>31</sup> अब शोषण की राजनीति को उखाड़ फेंका गया है और लोकतांत्रिक आदर्शों के माध्यम से सेवा की राजनीति की कल्पना की गई है। दलगत राजनीति की जगह जनशक्ति ले रही है। लोगों की सेवा और उनका उत्थान धीरे-धीरे दुनिया भर के राज्यों का शिखर बन रहा है और इसलिए गांधीवादी राजनीति की प्रासंगिकता को कम नहीं किया जा सकता है।<sup>32</sup>

### 3. क्या गांधीवादी लोकतंत्र स्वीकार्य है?

स्वशासन (स्वराज) की गांधीवादी अवधारणा वास्तविक लोकतंत्र है, जहां लोगों की शक्ति व्यक्तियों में निहित होती है और प्रत्येक व्यक्ति यह महसूस करता है कि वह स्वयं का वास्तविक स्वामी है। इस प्रकार लोकतंत्र में लोग संप्रभु होते हैं लेकिन संसदीय लोकतंत्र में पार्टी प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हालांकि, गांधी संसदीय लोकतंत्र के अत्यधिक आलोचक थे और अपनी स्मारकीय पुस्तक "हिंद स्वराज" (स्वशासन या होम रूल) में उन्होंने ब्रिटिश संसद को "बांझ महिला"<sup>33</sup> और एक वेश्या"<sup>22</sup> कहा है, हालांकि उनके लिए "अच्छी सरकार है स्वशासन का कोई विकल्प नहीं।"<sup>23</sup> संसदीय लोकतंत्र के बारे में गांधी के कथन में विरोधाभास है लेकिन लोकतांत्रिक आदर्शों की गहराई में उतरते हुए उन्होंने कहा है, "लोकतंत्र, अनुशासित और प्रबुद्ध दुनिया में सबसे अच्छी चीज है।"<sup>24</sup> साथ ही, वह लोकतंत्र के पश्चिमी मॉडल की थोक-बिक्री वाली नकल के खिलाफ भी लोगों को आगाह करता है, जहां केवल नाममात्र के लोकतंत्र हैं। हालांकि, उनके मन में लोकतंत्र के लिए सर्वोच्च सम्मान है और वे इसे "एक महान संस्था" कहते हैं और फिर से लोगों को जागरूक करते हैं और कहते हैं, "इसका बहुत दुरुपयोग किया जा सकता है।"<sup>25</sup> आज भी पूरे विश्व में लोकतंत्र शासन प्रणाली का व्यापक रूप से स्वीकृत सिद्धांत है और लोकतंत्र का कोई विकल्प नहीं है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भविष्य के लिए, लोकतंत्र की गांधीवादी अवधारणा ही एकमात्र आशा है, जहां इसे जमीनी स्तर पर अभ्यास किया जाना चाहिए, दल प्रणाली को स्वीकृत सिद्धांतों पर बनाया जाना चाहिए न कि पक्षपातपूर्ण रेखा पर, दल-बदल को दूर किया जाना चाहिए अड़ियल प्रतिनिधियों के साथ और वापस बुलाने का पालन किया जाना चाहिए। शासन के वर्तमान लोकतांत्रिक स्वरूप से दोषों और दोषों को दूर किया जाना चाहिए। लोकतंत्र को सुरक्षित बनाने के लिए जनशक्ति को स्वीकार करना होगा, अन्यथा यदि लोकतंत्र का दुरुपयोग या दुरुपयोग किया जाता है, तो लोगों का भविष्य बर्बाद हो जाता है।<sup>34</sup>

### 4. सामाजिक गतिशीलता की नींव

डॉ. वीपी वर्मा ने महात्मा गांधी के सामाजिक दर्शन के बारे में विस्तार से चर्चा की और वे कहते हैं, "गांधी ने जाति युद्ध, वर्ग संघर्ष और नस्लों के बीच लड़ाई के सिद्धांत को कभी भी मंजूरी नहीं दी। सभी प्रतिकूल चुनौतियों और विरोधी बाधाओं के बीच मानव जाति का अस्तित्व ही इसका प्रमाण है। अहिंसा का महत्व और उन्होंने कहा कि ऋषि (संत) जिन्होंने अहिंसा (अहिंसा) की प्रभावकारिता की पुष्टि की, वे गुरुत्वाकर्षण और गति के नियमों के प्रसिद्ध संस्थापक न्यूटन की तुलना में अधिक प्रतिभाशाली थे। इसलिए, गांधी सामाजिक समस्याओं को हल करना चाहते थे। सहयोग, सहानुभूतिपूर्ण आवास और वास्तविक भाईचारे की एकजुटता की तकनीकों का सहारा लेकर तनाव, सामाजिक असामंजस्य और सामाजिक असमानता। गांधी के लिए, अस्पृश्यता को हटाना राजनीतिक अंकगणित का विषय नहीं था, बल्कि यह हृदय का वास्तविक परिवर्तन होना था।<sup>35</sup> गीता के एक भक्त की तरह, वह दबी हुई आबादी

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

और उप-मानव प्राणियों में शाश्वत भावना को देखने की कोशिश कर रहा था।" वी.पी. वर्मा कहते हैं।<sup>27</sup>"गांधीजी का सामाजिक असमानता के खिलाफ निरंतर धर्मयुद्ध और भारतीय समाज में पिछड़े वर्गों और तथाकथित अछूतों को जिन अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ा और यह युगांतरकारी रहा है। भारत के इतिहास के लंबे समय में कोई अन्य सामाजिक पैगंबर इतना कैथोलिक नहीं रहा है।" गांधी की तरह अछूतों के प्रति उनका रवैया इतना सार्वभौमिक और मानवीय था।"<sup>28</sup>गांधी भारत के सभी निवासियों के आम अच्छे के नायक थे क्योंकि एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में, वह नैतिक आधार पर हिंदू-मुस्लिम एकता में विश्वास करते थे।<sup>29</sup> उन्होंने कभी भी सामाजिक, धार्मिक और जाति के आधार पर लोगों में भेद नहीं किया। दक्षिण अफ्रीका में उनका सत्याग्रह भारतीय समुदाय के नागरिक अधिकारों को भुनाने के लिए शुरू किया गया था, जिनमें मुसलमानों का बहुमत था और धन के बड़े हिस्से पर उनका नियंत्रण था।<sup>1</sup>

गांधी ने अपने पूरे जीवन में अभ्यास किया और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए खड़े रहे। यह उनके सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख दर्शन था। उनका विचार था कि साम्प्रदायिक सद्भाव के बिना राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता क्योंकि इसके अभाव में साम्प्रदायिक द्वेष समाज की जड़ों को खा जाएगा।<sup>35</sup> वे हमेशा साम्प्रदायिक शांति के पक्षधर रहे और वे अपने जीवन और गतिविधियों के माध्यम से यह शिक्षा देना चाहते थे कि शांति और अमन के बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता और विकास कोसों दूर रहेगा। अभी भी, यह आवश्यक है क्योंकि हम जानते हैं कि आतंकवादी समाज में सांप्रदायिक वैमनस्य और तनाव पैदा करने की कोशिश करता है। मुंबई और मालेगांव सहित महाराष्ट्र के कई हिस्सों में बम विस्फोटों की हालिया श्रृंखला हम सभी के लिए आंखें खोलने वाली होनी चाहिए कि सामाजिक गतिशीलता के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण के बिना, भारत प्रगति नहीं कर सकता।<sup>36</sup> यह अकेले भारत के लिए नहीं बल्कि पूरे ब्रह्मांड के लिए सच है क्योंकि सांप्रदायिक सद्भाव सर्वांगीण प्रगति, शांति और समृद्धि के लिए समय की आवश्यकता है। इस प्रकार यहां भी गांधी आने वाले समय के लिए प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। यदि हम गांधी की उपेक्षा करते हैं, तो हम अपने भविष्य की उपेक्षा कर रहे हैं और आने वाली पीढ़ियों साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने में हमारी विफलता को गंभीरता से लेंगी। गांधी उन गंभीर सामाजिक बुराइयों को पहचानने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्टवादी थे, जिनके साथ मूल वैदिक वर्ण (जाति) अपने विकास के दौरान भारग्रस्त हो गया था, और उन्होंने जातिगत श्रेष्ठता के नाम पर प्रचलित सामाजिक कुरीतियों और विकृत शोषण की निंदा की। अस्पृश्यता भी उनके लिए अतार्किक और अहिंसा (अहिंसा) का खंडन था। एक वेदांतवादी और एक वैष्णव के रूप में, गांधी सभी जीवन की आध्यात्मिक एकता में विश्वास करते थे, और इसलिए, वे अस्पृश्यता के बिल्कुल विरोधी थे।<sup>37</sup> अस्पृश्यता, जड़ और शाखाओं का उन्मूलन, हिंदू दुनिया के कूर वर्गों के पापों के प्रायश्चित्त का विषय था। अस्पृश्यता का उन्मूलन पारलौकिक मूल्य का मुद्दा था, यहाँ तक कि राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने इस नेक काम के लिए लड़ाई लड़ी और मैला ढोने वालों के साथ रात की नींद हराम की और उन्होंने इसे हिंदू धर्म पर एक कलंक माना और इसलिए, उन्होंने क्षोभ से कहा कि अगर वह पुनर्जन्म लेते हैं, <sup>38</sup>तो वे इस देश में जन्म लेना चाहेंगे। मैला ढोने वाला परिवार। सांप्रदायिक पुरस्कार के खिलाफ, वह आमरण अनशन पर चले गए और अंततः, यह डॉ. अम्बेडकर थे, गांधीवाद एक अस्पृष्ट और अधिकतर अलिखित दर्शन है लेकिन फिर भी, यह विश्वासों और दुनिया का एक निश्चित पैटर्न प्रस्तुत करता है, जो 'सामाजिक परिवर्तन' या 'सामाजिक क्रांति' को आगे बढ़ाने में बहुत सक्रिय शक्ति पैदा करने में सक्षम है। गांधीवादी विचारों को विकसित करने के लिए आचार्य विनोबा और काफी हद तक जय प्रकाश और दादा धर्माधिकारी ने विशुद्ध रूप से गांधीवादी पैटर्न और सिद्धांतों पर सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए कड़ी मेहनत की।<sup>39</sup> इसलिए, विनोबा तीसरी शक्ति (तीसरी शक्ति) और नारी शक्ति (स्त्री शक्ति) और जे.पी.एस. लोक शक्ति (लोक शक्ति) और युवा शक्ति (युवा शक्ति) की जोरदार खोज का बहुत ध्यान से अध्ययन करना होगा। इस तथ्य को स्वीकार करना ही उचित है कि 'जन समितियों' के गठन के माध्यम से जनशक्ति को मजबूत करना अत्यावश्यक था। (लोक समिति) नागरिक या सैन्य तानाशाही के खिलाफ सुरक्षा-मूल्य के रूप में। युवा शक्ति (युवा शक्ति) को मजबूत करने के लिए, सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए सभी स्तरों पर युवा शांति बल (तरुण शांति सेना) का गठन किया जाना था। 1974 में, क्रांति, युवा बल (युवा शक्ति) का नाम बदलकर छात्र युवा संघर्ष वाहिनी (छात्र-सह-युवा कार्य बल) कर दिया गया। यह संगठन 1974-77 के दौरान संपूर्ण क्रांति का अगुवा बन गया। अब, यह एक स्वीकृत तथ्य है कि, सामाजिक परिवर्तन की सर्वोदय अवधारणा बहुआयामी है और राज्य शक्ति के दुरुपयोग के खिलाफ एक सुरक्षा वाल्व है। बौद्धिक रूप से, यह किसी भी चीज़ की तुलना में लोकतंत्र की बेहतर गारंटी है। हालाँकि, यह अभी भी गांधीवादी विचारों की अपेक्षाओं के अनुसार सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त परिपक्व नहीं है। इसलिए, विश्व स्तर पर गांधीवादी सिद्धांतों पर वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए एक विश्व शांति बल (विश्व शांति सेवा) की जानकारी की कल्पना की गई है। जब शांतिपूर्ण और अहिंसक सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

जा सकती है तो उचित समय पर सावधानीपूर्वक किए गए प्रयासों के अपेक्षित परिणाम सामने आएंगे। रास्ता कठिन है लेकिन उद्देश्य प्रशंसनीय है और हमारे पास कोई विकल्प भी नहीं है क्योंकि हमें या तो एक साथ रहना है या एक साथ नष्ट हो जाना है।<sup>40</sup>

5. ट्रस्टीशिप सहित आर्थिक प्रासंगिकता:

गांधी का आर्थिक दर्शन जॉन रस्किन (1819-1900) से प्रेरित है और वे अत्यधिक प्रेरित थे, उनकी पुस्तक "अनटू दिस लास्ट" से लगभग 'पकड़े' गए। 32 उन्होंने जॉन रस्किन के आर्थिक दर्शन के आधार पर दक्षिण अफ्रीका में <sup>उरबन</sup> के पास 1904 में फीनिक्स सेटलमेंट की स्थापना की। यह समझौता अंततः एक सार्वजनिक ट्रस्ट में परिवर्तित हो गया।<sup>41</sup>

गांधी ने उन्नीसवीं सदी के अहस्तक्षेप के सिद्धांत की निंदा की, जो पूंजीवाद का राजनीतिक आधार है<sup>33</sup> और उन्होंने कहा कि श्रम पूंजी से श्रेष्ठ था।<sup>34</sup> जैसा कि हम सभी अब तक जानते हैं कि गांधी उद्योगवाद और बड़ी मशीनों के खिलाफ थे न कि मशीनों के खिलाफ। गांधी का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में दृढ़ विश्वास था और भूमि का स्वामित्व इसके जोतने वालों के पास था। भारतीय ग्रामीणों के दुखों को देखकर उनका दिल पसीज गया और इसलिए उन्होंने साधारण किसान के जीवन में पूरी तरह से सुधार के लिए अपना प्रसिद्ध "रचनात्मक कार्यक्रम"<sup>42</sup> तैयार किया। वे कुटीर उद्योगों के प्रखर भविष्यवक्ता थे। खादी भारतीय ग्रामीण समुदायों के पुनरुद्धार और कायाकल्प के लिए खड़ा था। उनके लिए खादी स्वदेशी का प्रतीक था।<sup>35</sup> मनुष्य को अपनी मेहनत के पसीने से अपनी रोटी कमाना चाहिए। यह विचार शुरू में सेंट पॉल, सेंट ऑगस्टाइन और टीएम बोनारेफ्ट द्वारा प्रायोजित और समर्थित था। गांधी ने अपने दक्षिण अफ्रीकी दिनों में न केवल उपदेश दिया बल्कि रोटी श्रम की इस अवधारणा का अभ्यास भी किया। 36 यहां, वह लियो टॉल्स्टॉय और यहां तक कि रूसी अराजकतावादी पीटर क्रोपोटकिन से प्रेरित थे। ट्रस्टीशिप की अवधारणा गीता के अपरिग्रह<sup>43</sup> (गैर-आधिपत्य) की अवधारणा से ली गई थी। समय बीतने के साथ, गांधी<sup>37</sup> ने ट्रस्टीशिप की अपेक्षाकृत नैतिक अवधारणा के लिए आर्थिक और समाजशास्त्रीय सामग्री को जोड़ना जारी रखा। उन्होंने कहा कि अगर अमीर इच्छुक ट्रस्टी नहीं बनेंगे, तो धन के धारक के खिलाफ सत्याग्रह का सहारा लेना होगा। 1938 में, उन्होंने कहा, "एक ट्रस्टी का कोई वारिस नहीं है, लेकिन जनता।"<sup>38</sup> इसका तात्पर्य यह है कि धनी वर्गों की समृद्धि में समुदाय या राज्य का भी अधिकार है। वह चाहते थे कि अमीर समाज की भलाई के लिए अपनी अतिरिक्त संपत्ति के ट्रस्टी बनें। इस प्रकार समाज को परिवार का विस्तार माना जाना था।<sup>39</sup> आधुनिक अर्थशास्त्र ने उत्पादन की लगभग सभी समस्याओं का समाधान कर दिया है लेकिन वितरण की समस्या आज भी दूर की कौड़ी है। गांधीवादी सिद्धांत के अनुसार आदर्श समाज में न केवल मजदूरों के लिए बल्कि विभिन्न व्यवसायों के अन्य सदस्यों के लिए भी मजदूरी की समानता होनी चाहिए। सभी व्यक्तियों को उनकी प्राकृतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की जानी चाहिए। इस प्रकार गांधी ने सामाजिक-आर्थिक बुराइयों के लिए रामबाण के रूप में वकील, डॉक्टर, शिक्षक और मैला ढोने वालों के लिए मजदूरी की समानता के क्रांतिकारी सिद्धांत को अपनाया। वह सभी प्रकार के श्रम के लिए मजदूरी की समानता की रस्किन की अवधारणा<sup>40</sup> का विस्तार करता है और समान वितरण की वकालत करता है<sup>41</sup>। इस प्रकार, यह पर्याप्त रूप से सिद्ध है कि गांधीवादी आर्थिक विचारों के माध्यम से ही वितरण की विशाल समस्या को हल किया जा सकता है, जो कि समाज के शुभचिंतकों के बीच हृदय खोज कठिन अभ्यास है, इसके बिना मानवता का भविष्य अंधकारमय और सबसे बड़ा लगता है तबाही आने वाली है और कोई भी इसे हमेशा के लिए टाल नहीं सकता। इसलिए, गांधीवादी आर्थिक विचार और ट्रस्टीशिप सिद्धांतों की प्रासंगिकता को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।<sup>44</sup>

6. शैक्षिक प्रासंगिकता

सच्ची शिक्षा वह है जो आध्यात्मिक, बौद्धिक और भौतिक संकायों को बाहर खींचती है और उत्तेजित करती है।<sup>42</sup> गांधी के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य संपूर्ण मनुष्य का निर्माण करना और उसके अभिन्न व्यक्तित्व का विकास करना होना चाहिए। "साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है। यह न तो शिक्षा का अंत है और न ही शुरुआत।"<sup>43</sup> शिक्षा का उद्देश्य बच्चों की ऊर्जा की पूर्ण क्षमताओं का विकास करना होना चाहिए। मनुष्य में जो कुछ छिपा है, उसे बाहर निकालने की प्रक्रिया ही शिक्षा है। बाह्य शिक्षा न तो सत् (सत्य) है और न असत् (असत्य), बल्कि दोनों से भिन्न है, इसलिए अनिर्वचनीय (व्याख्या से परे) है। इसलिए यह सोचना भ्रम है कि केवल शिक्षा ही आत्मा का विकास कर सकती है। इस अर्थ में, इसमें बहुत कम वास्तविकता है।<sup>44</sup>

साहस के बिना सीखना एक मोम की मूर्ति की तरह है, जो देखने में सुंदर है लेकिन गर्म पदार्थ के कम से कम स्पर्श से पिघलने के लिए बाध्य है।<sup>45</sup> दूसरी ओर, यदि नैतिक प्रशिक्षण की नींव मजबूती से रखी जाती है, तो "बच्चे अन्य सभी चीजें स्वयं सीख सकते



# International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

हैं।<sup>46</sup> गांधी एक नए समाज का निर्माण करना चाहते थे लेकिन वे आशंकित थे कि इसे पुरानी शिक्षा प्रणाली के साथ नहीं बनाया जा सकता है। शिक्षा बेकार है, अगर यह सेवा और त्याग की भावना को मन में बैठाने में विफल रहती है। शिक्षा, यदि यह महत्वपूर्ण चीज है, तो इसे अपने आस-पास अपनी सुगंध बिखेरनी चाहिए।<sup>45</sup>

एक स्कूल को कार्यशाला से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। कार्यशाला ही विद्यालय है। हमें कमाते समय सीखना चाहिए और इसके विपरीत। संपूर्ण सामान्य शिक्षा शिल्प के माध्यम से और साथ ही साथ उनकी प्रगति के साथ आनी चाहिए।<sup>48</sup> पूर्ण विकसित मानवों को उत्पन्न करने की एकमात्र विधि है।<sup>50</sup> विद्वानों को छोड़कर अन्य सभी इस बात से सहमत हैं कि शैक्षिक पाठ्यक्रम में काम को स्थान मिलना चाहिए। कुछ लोग काम को उसकी जरूरतों को स्वीकार किए बिना केवल एक उपांग के रूप में देखते हैं। हालाँकि, शिक्षा की वास्तविक तकनीक सहसंबंध की तकनीक होनी चाहिए।<sup>52</sup> गतिविधि बच्चे की अव्यक्त क्षमताओं को बाहर निकालती है जो कि शिक्षा का उद्देश्य है। इसलिए, यह विशुद्ध रूप से शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी शिक्षा की सबसे अच्छी तकनीक है।<sup>54</sup> अतः एक ओर ज्ञान का विस्फोट होता है, दूसरी ओर स्वयं मनुष्य का विस्फोट होता है। जवाहरलाल नेहरू गांधीवादी भाषा बोलते हैं<sup>46</sup>, जब वे कहते हैं, "शिक्षा को एक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण दुनिया की स्थापना के लिए सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का विकास करना चाहिए।"<sup>55</sup> गांधी की बेसिक शिक्षा की अवधारणा पर सबसे अधिक ध्यान दिया गया है। इसका उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। उनका प्राथमिक जोर 3'H's यानी - हेड, हार्ट और हैंड पर है, न कि 3 R पर - पढ़ना, लिखना और अंकगणित। गांधी के लिए, शिक्षा की एक संतोषजनक व्यवस्था के लिए दिमाग, दिल और आत्मा का सच्चा विकास आवश्यक है।<sup>56</sup> उनकी योजना में, व्यावसायिक प्रशिक्षण या कार्य अनुभव ने एक केंद्रीय स्थान पर कब्जा कर लिया क्योंकि वह चाहते थे कि शिक्षा भारतीय समाज की सामाजिक-आर्थिक आवश्यकता के प्रति उत्तरदायी हो। शायद, यह पुस्तकोन्मुखी/केंद्रीय शिक्षा के प्रति उनके विरोध के कारणों में से एक था।<sup>47</sup> शिल्प के माध्यम से शिक्षा का खर्च।<sup>57</sup> गांधी द्वारा परिकल्पित बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भर और अच्छे नागरिक तैयार करना था। भारत के खोए हुए गौरव और प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने के लिए मूल्य-उन्मुखता पर आधारित गाँधी के शैक्षिक विचारों पर पुनः बल देना होगा। शिक्षा का पाठ्यक्रम मूल्य आधारित होने के साथ-साथ सूचना उन्मुख भी होना चाहिए। निरक्षरता का उन्मूलन और शिक्षा का प्रसारण समय की प्रमुख आवश्यकता है ताकि इक्कीसवीं सदी के नागरिक सतर्क और प्रबुद्ध हो सकें।<sup>58</sup> इससे पहले, "बेसिक शिक्षा" के माध्यम से गांधी की शिक्षा की अवधारणा को मूर्त रूप दिया जा सकता था, इसे सच्ची भावना के साथ लागू नहीं किया जा सका और इसलिए शिक्षाविदों के मन में आधुनिक समय के लिए इसकी प्रभावकारिता, उपयोगिता और प्रासंगिकता के बारे में आशंका है।<sup>48</sup> लेकिन उच्च विचार के लोग हमेशा वर्तमान शिक्षा प्रणाली की विफलता पर विचार करते हैं, जिसने तथाकथित शिक्षित बेरोजगारों की संख्या को कई गुना बढ़ा दिया है और शिक्षित बेरोजगारों की यह विशाल सेना राजनीति और समाज दोनों के लिए खतरा बनती जा रही है। अभी भी समाज को संकट और पूर्ण विनाश से बचाने के लिए मूल्य शिक्षा की गांधीवादी अवधारणाओं को लागू करने की आशा की एक किरण है।<sup>49</sup>

## 7. विश्व सरकार और विश्व शांति का गांधीवादी विचार

महात्मा गांधी ने लिखा: "राष्ट्रवाद उच्चतम अवधारणा नहीं है; उच्चतम अवधारणा विश्व समुदाय है। मैं इस दुनिया में रहना पसंद नहीं करूंगा, अगर एक नहीं होना है।" दिव्य ज्ञान की सर्वोत्कृष्टता, "वसुधैव कुटुम्बकुम" या ("मानव जाति एक परिवार है"), जिसे भारत सहस्राब्दी पहले घोषित किया गया था, महात्मा और उनके विचार का अंतिम उद्देश्य था। इसलिए, उनके सबसे बड़े अनुयायी, सलाहकार और व्याख्याकार, आचार्य विनोबा भावे का एक महान नारा है 'जय जगत' या 'जय एक विश्व'। राष्ट्र राज्यों ने बड़े पैमाने पर युद्धों और तबाही का ढेर देखा है और इसलिए विश्व सरकार का विचार, अगर भौतिक रूप से असमानता को समाप्त कर देगा, तो विभिन्न राष्ट्रों के लोगों के बीच असहमति का एक वास्तविक कारण होगा। यही कारण है कि सुपर-नेशनल संस्थान जैसे ई.सी.सी. पहले की तुलना में आज अधिक आवश्यक होते जा रहे हैं। IMF, GATT, IBRD, FAO, WHO, ILO आदि जैसी संस्थाओं पर भूख, बीमारी और अशिक्षा की समस्याओं को दबाने वाली मानवता के समाधान का आरोप लगाया जाता है। साथ ही युद्ध व्यय की बाध्यता हमारे लिए एक और सतत स्मरण है कि हमें पूरी दुनिया को एक सरकार के अधीन लाने के प्रश्न पर गंभीरता से विचार करना है। तो प्रो. अर्नोल्ड टॉपनबी ने भी कहा, "यदि हम युद्ध को समाप्त नहीं करते हैं, तो युद्ध हमें समाप्त करने जा रहा है।" परमाणु बम के जनक अल्बर्ट आइंस्टीन की चेतावनी कहीं अधिक गंभीर है:<sup>50</sup>

"आखिरकार शांति अविभाज्य है। दुनिया के एक हिस्से में शांति और दूसरे में युद्ध नहीं हो सकता। दुनिया में शांति सुनिश्चित की जा सकती है अगर एक ही सरकार हथियारों पर नियंत्रण रखती है। वास्तव में, कोई बलिदान बहुत बड़ा नहीं होगा विश्व शांति प्राप्त करें -

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

राष्ट्रीय संप्रभुता के एक हिस्से का समर्पण या अंतरराष्ट्रीय विवादों को निपटाने में बल के उपयोग का त्याग और, यदि मानवता को जीवित रहना है, तो उसे खुद को एक प्राधिकरण के नियंत्रण में लाना होगा और जितनी जल्दी हो सके यह किया जाता है, अपने लिए बेहतर होगा।"<sup>59</sup>

गांधी का राष्ट्रवाद, हालांकि उग्र है, अनन्य नहीं है, किसी राष्ट्र या व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं बनाया गया है।<sup>60</sup> उनका राष्ट्रवाद ध्वनि अंतर्राष्ट्रीयतावाद की आवश्यक पूर्व शर्त थी। "स्वराज (होम रूल) के माध्यम से, हम पूरी दुनिया की सेवा करेंगे।"<sup>61</sup> भारतीय राष्ट्रवाद अनन्य, या आक्रामक और न ही विनाशकारी नहीं है। यह स्वास्थ्य देने वाला, धार्मिक और इसलिए मानवतावादी है, "भारत को मानवता के लिए मरने की इच्छा रखने से पहले जीना सीखना चाहिए।"<sup>62</sup> उन्होंने आगे कहा, "मैं भारत को स्वतंत्र और मजबूत देखना चाहता हूँ ताकि वह दुनिया की भलाई के लिए खुद को स्वेच्छा से और शुद्ध बलिदान के रूप में पेश कर सके।"<sup>63</sup> वे और आगे बढ़े।<sup>51</sup>.... "राष्ट्रवाद के बारे में मेरा विचार यह है कि मेरा देश मर जाए ताकि मानव जाति जीवित रहे। गांधी स्पष्ट रूप से किसी प्रकार के विश्व संघ की ओर इशारा करते हैं, जब वे कहते हैं: "दुनिया का बेहतर दिमाग आज पूरी तरह से स्वतंत्र राज्यों को एक दूसरे के खिलाफ चेतावनी नहीं देना चाहता है, बल्कि मैत्रीपूर्ण अन्योन्याश्रित राज्यों का संघ है।"<sup>65</sup> इसके अलावा उन्होंने कहा, "एकमात्र शर्त जिस पर दुनिया रह सकती है, वह घटक भागों के प्रतिनिधियों से बने एक केंद्रीय शासी निकाय के तहत एकजुट हो रही है।"<sup>66</sup>

1931 में, जिनेवा में राष्ट्र संघ के बारे में बोलते हुए, उन्होंने कहा, "यह युद्ध की जगह लेने की उम्मीद है, और राष्ट्रों के बीच मध्यस्थता करने की अपनी शक्ति से।"<sup>67</sup> लेकिन उसी समय, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, "उस लीग में आवश्यक स्वीकृति का अभाव है।"<sup>68</sup> अहिंसा की अपनी विचारधारा के कट्टर देशभक्त के रूप में, गांधी क्रूर शारीरिक बल के किसी भी अनुमोदन के खिलाफ थे। यूएनओ के गठन के लिए सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन के उसी समय, गांधी ने कहा था, "अंतर्राष्ट्रीय पुलिस बल का प्रतिधारण किसी भी तरह से शांति का प्रतीक नहीं है। युद्ध और हिंसा में विश्वास को खत्म करना वास्तविक की स्थापना के लिए आवश्यक है।" सभी जातियों और राष्ट्रों की स्वतंत्रता और समानता पर आधारित शांति" (17.04.1945)। वह जबरन निहत्थे लोगों पर थोपे गए सशस्त्र शांति के खिलाफ थे।<sup>53</sup>

इस प्रकार, गांधी ने स्पष्ट रूप से एक विश्व सरकार की वकालत की थी क्योंकि इससे शांति के युग की शुरुआत होती। हालाँकि, शांति सेना उनके द्वारा समर्थित नहीं है, विश्व शांति सेना (अंतर्राष्ट्रीय शांति सेना) ही एकमात्र समाधान है। वर्तमान एकध्रुवीय दुनिया में इसका महत्व और बढ़ गया है और गांधी दिन-ब-दिन प्रासंगिक होते जा रहे हैं।<sup>54</sup>

### निष्कर्ष

गांधी एक सतत नैतिक विद्रोही थे जिन्होंने साम्राज्यवादी, उग्रवाद, सामाजिक शोषण, आर्थिक उत्पीड़न और अनैतिक प्रवृत्तियों की गुलामी के खिलाफ संगठित आंदोलन का आह्वान किया। ऐसे समय में जब दर्शन और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में विचारक पूर्वी विरासत और पश्चिमी विचारों का जायजा लेने की कोशिश कर रहे हैं, गांधी पूर्व और पश्चिम के संयोजन के प्रतीक के रूप में खड़े हैं। एशिया और अफ्रीका की आत्मा को जगाने में गांधी की सेवा का अत्यधिक महत्व है। हो-ची-मिन्ह और नेल्सन मंडेला ने दो महाद्वीपों एशिया और अफ्रीका के नेताओं और कार्यकर्ताओं की प्रेरणा की गवाही दी है, जो महात्मा के परीक्षणों, कष्टों और शिक्षाओं से उनके काम में प्राप्त हुए थे।<sup>55</sup> यहाँ तक कि डॉ. मार्टिन लूथर किंग द्वितीय के नेतृत्व में उत्तरी अमेरिका में नीग्रो मुक्तिवादियों ने भी उनसे प्रेरणा प्राप्त की। रोमेन रोलेंड ने महात्मा के कार्यों के नैतिक महत्व को पहचाना था। आइंस्टीन और टैगोर दोनों ने गांधी के आध्यात्मिक महत्व की गवाही दी। ऐसे समय में, जब सांस्कृतिक मानदंड ढह रहे हैं और सभ्यता की संरचना खतरे में है, गांधी की अमर आत्मा एक शक्तिशाली हिमालय के रूप में खड़ी है, जो मानव जाति की मुक्ति के लिए समर्पित लोगों के लिए शक्ति का एक बड़ा स्रोत है।<sup>70</sup> अब इक्कीसवीं सदी में, गांधी एक विश्व परिघटना हैं। इसका मतलब है, जैसे कि उसका पुनर्जन्म हुआ हो। दुनिया जानती है कि डॉ. मार्टिन लूथर किंग II, लेख वालेसा, नेल्सन मंडेला, हो-ची-मिन्ह, युंग-सु-की, मिस्टर आर्थर रत्न, डेसाकू इकेदा और दुनिया के कई जीनियस ने उनके पदचिह्नों का अनुसरण किया है। महान महात्मा. 1981 में, दोनों गोलाधर के 53 नोबेल पुरस्कार विजेताओं के पुरुषों और महिलाओं ने हमें एक अभूतपूर्व प्रलय की चेतावनी दी, जिसमें विनाश की सभी भयावहताएं शामिल थीं और

# International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly Peer Reviewed Journal)

Vol. 4, Issue 7, July 2015

बर्बरता और मृत्यु की सीमाओं का विस्तार किया गया था। अजीब तरह से, वे सभी सर्वसम्मति से एक व्यक्ति-गांधी और मानवाधिकारों की सबसे मौलिक लड़ाई- जीवन के अधिकार से लड़ने के लिए उनकी अहिंसक कार्रवाई को देखते हैं<sup>56</sup>। लगभग 60 साल की शहादत के बाद गांधी अब वैश्विक स्तर पर पहले से ज्यादा प्रासंगिक हैं। विशेष रूप से, 2001 के 9/11 के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका के ट्विन टॉवर वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन की इमारतों पर हुए आतंकवादी हमलों के बाद, गांधी को केवल आकस्मिक रूप से अधिक श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। उन्हें पूरे ब्रह्मांड में कार्रवाई के एक महान नेता, एक मुक्तिदाता और एक पैगंबर शहीद के रूप में पहचाना जा रहा है। समय की आवश्यकता है कि अपने कर्मों, कार्यों और विचारों को अमल में लाया जाए और इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में उनकी प्रासंगिकता निर्विवाद और निर्विवाद है।<sup>57</sup> मनुष्य के अस्तित्व के लिए, उसकी सलाह पर कार्य करना हमारे लिए अनिवार्य है क्योंकि केवल उसकी प्रासंगिकता पर, हम एक साथ जीवित रहेंगे या यदि हम अपने उद्यम में विफल होते हैं, तो हम एक साथ नष्ट होने के लिए बाध्य हैं।<sup>58</sup>

## संदर्भ

1. एलएम सिंघवी, एमआर राय और रामकृष्णन (ईडीएस) 'नानी पालकीवाला-सिलेक्टेड वर्क्स' वाइकिंग, भवन बुक यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली, पीपी-238-243।
2. वही-237
3. गांधी, एमके, - साबरमती-1928। (13-15 जनवरी, 1928 को साबरमती आश्रम में आयोजित फेडरेशन ऑफ इंटरनेशनल फेलोशिप की पहली वार्षिक बैठक की रिपोर्ट।
4. गांधी, एमके, - हिंद स्वराज, अहमदाबाद नवजीवन 1944, पृष्ठ-24।
5. गांधी एमके, - यरवदा मंदिर, अहमदाबाद, नवजीवन, 1935, पीपी-55
6. गांधी, एमके, - महात्मा गांधी का मन, पृष्ठ-81
7. वही, पृष्ठ-82
8. ब्रेख्त, ए., -पॉलिटिकल थ्योरी- द फाउंडेशन ऑफ ट्रेडिथ सेंचुरी पॉलिटिकल थॉट, (प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1959, चैप्टर-XI)।
9. नारायण, जेपी, - भारतीय राजनीति के पुनर्निर्माण के लिए एक याचिका- op.cit-p-3।
10. "भारतीय दार्शनिक कांग्रेस का समकालीन दर्शन (श्रीनगर, 1957), पृष्ठ-88
11. कुंजरू, एचएन, - "आध्यात्मिक राजनीति", महात्मा गांधी -100 वर्ष, op.cit.,p-224।
12. मलिक, बीके, - गांधी-ए प्रॉफेसी (बॉम्बे, हिंद किताब लिमिटेड, 1948-पी-90)
13. राधाकृष्णन, एस. (सं.)-महात्मा गांधी, निबंध और चुनाव, Op.cit. पृ-14.
14. भावे, वी., - लोकतांत्रिक मूल्य (काशी सर्व सेवा संघ, 1962)पृष्ठ-213।
15. सुरेश राम- विनोबा एंड हिज मिशन (सेवाग्राम, एबीएसएसएस), 1954-पी-178।
16. नारायण, जेपी, - लोगों के लिए स्वराज (काशी एबीएसएसएस 1963), सीएच-1, II और III।
17. गांधी, एमके, -हरिजन, 12.11.1938।
18. यहूदा, जे., दिस डेमोक्रेसी (पीतम, 1973), पृष्ठ-12
19. नारायण, जेपी- भारतीय राजनीति के पुनर्निर्माण के लिए एक दलील-op.cit.p-11।
20. लहिया, आरएम, -op.cit.pp-127-28।
21. गांधी, एमके, - यंग इंडिया, 12.1.1928।
22. हिन्द स्वराज-च-V, पृ.12
23. तेंदुलकर, डीजी, महात्मा, Vol.II, पृष्ठ 24
24. प्रभु, आरके, और राव, यूआर, -द माइंड ऑफ महात्मा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पी-130
25. महात्मा का मन-पृ.345।
26. वीपी वर्मा, - महात्मा गांधी और सर्वोदय का राजनीतिक दर्शन (पटना भारती भवन), 1994) पीपी-404-18।
27. वही, पीपी-404-418.
28. उक्त, पृष्ठ-100।
29. राजेंद्र प्रसाद, - महात्मा गांधी और बिहार (बॉम्बे, 1949), पृष्ठ-129।
30. वीपी वर्मा-राजनीतिक दर्शन महात्मा गांधी और सर्वोदय पृष्ठ-100।

**International Journal of Innovative Research in Science,  
Engineering and Technology**

*(A Monthly Peer Reviewed Journal)*

**Vol. 4, Issue 7, July 2015**

31. वेबस्टर्स न्यू ट्वेंटीएथ सेंचुरी डिक्शनरी, एड। डब्ल्यूटी हेरिया (लंदन जी. बेल एंड संस, 1928, 2 खंड), खंड II, पृष्ठ-1826।
32. जॉन रस्किन, - अनटू दिस लास्ट (1860), मुनोरा पुल्वेरिस। (1826)
33. वीपी वर्मा- पोलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी एंड सरोवदाय, पृ. 110.
34. वही, पृष्ठ-110as हरिजन से उद्धृत, 7 सितंबर, 1947।
35. उक्त, पृ-118.
36. वही, पृ.125.
37. भगवद्गीता - VI-पृष्ठ-10।
38. हरिजन, - अप्रैल 13,1938।
39. महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन, यंग इंडिया - मार्च 17,1927 (मेरा आदर्श समान वितरण है,) पृष्ठ-112।
40. वही, पृ. - 126।
41. एमके गांधी, - यंग इंडिया, मार्च 17, 1927 (मेरा आदर्श समान वितरण है)।
42. एमके गांधी-हरिजन, 9.9.1937।
43. वही, 31.7. 1937.
44. विनोबा भावे, शिक्षा पर विचार (वाराणसी; सर्व सेवा संघ) प्रकाशन, 1964), पृष्ठ-7।
45. एमके गांधी, -यंग इंडिया, 21.6.1928।
46. एमके गांधी,- एन ऑटोबायोग्राफी (अहमदाबाद नवजीवन, 1948, पृष्ठ-408।
47. एमके गांधी,- यंग इंडिया, 14.11.1929।
48. वही, 4.12.24.
49. एम.एस. पटेल, - op.cit., पृष्ठ-71।
50. एमके गांधी, - हरिजन- 18.9.1937।
51. एमके गांधी, - यंग इंडिया, 1.9। 1921.
52. विनोबा भावे,-शिक्षा विचार, चौ. -13।
53. बी. कुमारप्पा,-बेसिक शिक्षा, पीपी-5-6(प्रस्तावना)
54. एबी सोलंकी, - द टेक्नीक ऑफ कोरिलेशन, अध्याय-9।
55. जवाहर लाल नेहरू द्वारा भाषण, शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में उद्धृत, पृष्ठ-22।
56. जे. पांडे (संपा.)- गांधी एंड 21 सेंचुरी, पेज-223 ऑन गांधीज व्यूज ऑन वैल्यू एजुकेशन।
57. वही, 223.
58. वही, 224.
59. डॉ. रामजी सिंह, - गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता, पृष्ठ 98।
60. एमके गांधी,- यंग इंडिया-26.3.1918।
61. एमके गांधी, - यंग इंडिया -16.4.1941।
62. एमके गांधी,-यंग इंडिया-13.10.1921।
63. एमके गांधी,- यंग इंडिया-19.9. 1925.
64. देसाई, महादेव, गांधीजी इन इंडियन विलेजेज, पृष्ठ-170।
65. एमके गांधी,-यंग इंडिया-26.12.1924।
66. एमके गांधी,-हरिजन, 8.6.1947।
67. शर्मा, बी एस,- गांधी एक राजनीतिक विचारक के रूप में, पीपी-389-90।
68. पूर्वोक्त
69. एम के गांधी,-हरिजन-14.10.1939।
70. वीपी वर्मा,- द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी एंड सरोवदाय, (पटना, भारती भवन, 1994), पीपी-404-18